Vol 4 Issue 8 Feb 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-8 | Feb-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

GRT

गांधी एवं राजनीति का आध्यात्मिकरण

महेश कुमार रचियता
राजनीतिक विज्ञान डॉ. बी.आर.ए. राज. महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सारांश : महात्मा गांधी एक पैगम्बर, एक सन्त, एक महामानव तथा एक नैतिक राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने राजनीति को कभी धर्म से अलग नहीं माना और सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह के साधनों से भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन का संचालन किया। उनकी साधन और साध्य के बारे में जिससे सार्वजनिक जीवन में मनुष्य को चारित्रिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक बल मिलता था। महात्मा गांधी का सम्पूर्ण जीवन आध्यात्मिकता से ओतप्रोत था। उनका संदेश विशेषतः भारत के आध्यात्मिक उत्थान के लिए था।

प्रस्तावना :

गांधी जी ऐसे कर्मयोगी थे जिन्होंने धर्म को आत्मोद्धार का एक साधन मानने के साथ-साथ उसे व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की समस्याओं के समाधान का एक उपकरण माना अपने 'धर्म' की धारणा को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि 'धर्म' वह है जो सभी धर्मों में अन्तर्निहित है तथा जो हमें अपने निर्माता के आमने-सामने ला देता है। धर्म मानव मात्र की व्यवहारिक कार्यकलापों में विद्यमान होना चाहिए तथा उनसे सम्बन्धित समस्याओं का समाधान करना चाहिए। गांधीजी ने अपने धर्म के विषय में विस्तार से विवेचन किया है। गांधीजी ने अपने दर्शन में धर्म को सर्वोपरि स्थान देते हुए कहा है कि मैंने आज तक जो कुछ भी किया है उसके पीछे एक धार्मिक चेतना और एक धार्मिक उद्देश्य रहा है। वस्तुतः गांधीजी का सम्पूर्ण राजनीतिक दर्शन तथा उनके समस्त साधन उनके धार्मिक तथा नैतिक सिद्धान्त के उप सिद्धान्त हैं। गांधीजी के विचारानुसार ''धर्म-शून्य राजनीति मौत के फन्दे के समान है, जो आत्मा को नष्ट कर देती है।

गांधीजी की मान्यता थी कि धर्म मनुष्य के जीवन की धुरी हे तथा राजनीति अपनी तमाम बुराइयों के बावजूद भी मनुष्य के लिए अनिवार्य है। गांधी जी ने कहा कि, ''यदि मैं राजनीति में भाग लेता हूँ तो उसका एकमात्र कारण यही है कि राजनीति वर्तमान समय में हमें सर्प की कुण्डलियों की भाँति घेरे हुए है, जिसके चंगुल से अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी कोई नहीं निकल सकता है। अतः मैं इस सर्प से द्वन्द्व युद्ध करना चाहता हूँ। मैं राजनीति में धर्म को लाने का प्रयत्न कर रहा हूँ।;; धर्म ही गांधीजी को राजनीति नहीं त्यागने को विवश करता है। जीवन का लक्ष्य है आत्म-साक्षात्कार करना और गांधीजी का विश्वास था कि आत्म-साक्षात्कार के लिए यह आवश्यक है कि सम्पूर्ण मानव जाति के साथ तादात्म्य स्थापित किया जाये और सबके हित में सबके कल्याण हेतु कार्य किया जाये। राजनीति में भाग लिये बिना वह ऐसा नहीं कर सकता। क्योंकि मनुष्य के सभी कार्य जीवन समष्टि के अविभाज्य अंग होते हैं। आज आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और शुद्र धार्मिक कार्य एक-दूसरे से पृथक् नहीं किए जा सकते। गांधीजी का मत था कि जो मनुष्य देश प्रेम को नहीं जानता वह अपने सच्चे कर्तव्य या धर्म को भी नहीं जानता है। धर्म मानव सेवा, सर्व हित, सर्व कल्याण, देश-प्रेम आदि सभी का समष्टि रूप है। गांधीजी ने धर्म की सृजनात्मक शक्ति को स्वीकार किया और धर्म उनके लिए नैतिक अनुशासन की व्यवस्था थी। उन्होंने कहा, ''मेरे मत में धर्म का अर्थ है नैतिकता। मैं ऐसे किसी धर्म को नहीं मानता जो नैतिकता को विरोध करता हो या नैतिकता के परे कोई उपदेश देता हो। धर्म तो वास्तव में नैतिकता को व्यवहार में घटित करने की पराकाष्ठा है। उन्होंने समाज में व्याप्त धर्म के विकृत रूप को देखा और अपने प्रयोगों एवं निष्कर्षों के आधार पर धर्म की पुनर्व्याख्या की। गांधीजी ने धर्म को जीवन और समाज का आधारभूत तत्व स्वीकार किया और यह माना कि धर्म को निकाल देने से व्यक्ति और समाज दोनों निष्प्राण और शून्य हो जाते हैं.।

गांधीजी ने धर्म के क्षेत्र में संसार के प्रत्येक कार्य, व्यक्ति क प्रत्येक पक्ष और समाज के प्रत्येक अंग को समेटा। गांधीजी का धर्म सम्प्रदाय को नहीं मानता था। उनके मत में धर्म तो मानव समाज का शाश्वत तत्व है जो हिन्दुत्व, इस्लाम

और ईसाइयत से परे है। गांधीजी के आध्यात्मिक चिंतन का सार तत्व यह था कि मनुष्य का आत्मिक बल उसके शारीरिक बल से कई गुना अधिक श्रेष्ठ है। आत्मिक बल में सत्य, अहिंसा, प्रेम, शान्ति एवं मानव-सेवा सम्मिलित थे।

यद्यपि गोपाल कृष्ण गोखले ने राजनीति को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करने का एक प्रयास किया था और उसके लिए उन्होंने भारत सेवक समाज की स्थापना भी की थी लेकिन भारतीय राजनीति के क्षेत्र में यह गांधीजी का ही योगदान था कि उन्होंने राजनीति के आध्यात्मिक स्वरूप की न केवल स्थापना की अपितु उसे आम जन के मन में स्थापित भी कराया।

गांधीजी दर्शन में धर्म

गांधीजी का दर्शन सत्य एवं ईश्वर जैसी धारणाओं से ओतप्रोत है। वे अनन्य राजनेताओं की भाँति नास्तिक और भौतिकवादी नहीं हैं बल्कि वे एक ऐसे विचारक और कर्मवादी नेता हैं जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्म की भूमिका को स्वीकार करते हैं। गांधीजी ने अपने धर्म के बारे में विस्तार से विवेचन किया है। उनका वास्तविक 'धर्म' हिन्दू धर्म से भी ऊपर उठा हुआ था। यद्यपि वे स्वयं को हिन्दू ही मानते थे और सवयं को सनातनी हिन्दू कहते थे। उन्होंने कहा, ''मेरा धर्म हिन्दू धर्म है, जो मरे लिए मानवता का 'धर्म' है और उसमें सभी धर्मो के सर्वोत्तम तत्व हैं। मैं अपने इस धर्म तक सत्य और अहिंसा के माध्यम से पहुंचा हूँ। अब मैं ईश्वर सत्य है, के स्थान पर सत्य ईश्वर है, कहने लगा हूँ। इस धर्म का देनिक सामाजिक जीवन पर प्रभाव देखता हूँ। सत्य का साक्षात्कार जीवन के अनन्त महासागर के साथ तादात्म्य किए बिना नहीं किया जा सकता, अतः समाज सेवा से बच निकलने का कोई रास्ता नहीं है।'' गांधीजी ने अपने सम्पूर्ण जीवन दर्शन ाक आधार उपनिषदों के इस मूल मंत्र ''ब्रह्म सत्यम् जगत् मिथ्या'' को बनायां उन्होंने वेदान्तिक दर्शन की इस आस्था को स्वीकार किया कि यह सम्पूर्ण संसार ब्रह्म की आध्यात्मिक चेतना से परिव्याप्त है और इस संसार में जो कुछ भी हे वह इसी ब्रह्म का प्रतिबिम्ब मात्र है और इस सृष्टि में ब्रह्म के अलावा सभी अपूर्ण हैं तथापि वे स्वयं में ब्रह्म के अंश को समाविष्ट करते हैं। इसलिए कहते हैं कि हम लाठी, तलवार, बंदूक सब छोड़ें और ईश्वर को अपने साथ लेकर चल दें। उनका 'धर्म' वृक्ष की तरह एक है, जिसकी विभिन्न धर्मों के रूप में अनेक शाखाएँ हैं। उन सभी धर्मों का स्रोत एक ही है, क्योंकि ईश्वर एक ही है। विभिन्न धर्म उस ईश्वर तक ले जाने के मार्ग हैं। यद्यपि विभिन्न धर्मों में ईश्वर के अलग-अलग नाम बताए गए हैं किन्तु गांधीजी के मत में वे उसके व्यक्तित्व की भिन्नता को नहीं अपितु गुणों की भिन्नता को दर्शाते हैं। विभिन्न धर्म एक ही बिन्दु पर मिलने वाले भिन्न-भिन्न पथ हैं। सभी धर्मों का एक ही समान नैतिक आधार है, जिसे हम विश्व-धर्म कह सकते हैं।

एक बार प्रार्थना-प्रवचन के समय पर गांधीजी ने कहा, ''मैं कहता हूँ कि मैं हिन्दू हूँ, सच्चा हिन्दू हूँ और सनातनी हिन्दू हूँ, इसीलिए मैं मुसलमान भी हूँ, सिख भी हूँ, पारसी भी हूँ, ईसाई भी हूँ, यहूदी भी हूँ, जितने मजहब हैं, मैं सबको एक ही पेड़ की शाखाएँ मानता हूँ। मैं किस शाखा को पसंद करूँ और किसको छोड़ दूँ? किसकी पत्तियाँ मैं लूँ और किसकी पत्तियाँ मैं छोड दूँ। सब मजहब एक हैं। ऐसा मैं बना हूँ, उसका मैं क्या करूँ? सब लोग अगर मेरी तरह समझने लगें तो हिन्दुस्तान में पूरी शांति हो जाये।''

गांधीजी ने स्वयं यह स्वीकार किया था कि वे एक निष्ठावान हिन्दू हैं। इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि, ''उनका हिन्दुत्व उन्हें अनिवार्य रूप से इस बात की प्रेरणा देता है कि वे दूसरे धर्मावलम्बियों के प्रति भी स्नेह और सहिष्णुता का भाव रखें।'' उन्होंने कहा, ''यदि मैं किसी मुसलमान या ईसाई को संकट में पड़ा देखूँ अथवा उसके विरूद्ध कोई अन्याय होते देखूँ और संकट से उसका त्राण न करूँ अथ्वा उसके अन्याय का प्रतिकार करने के लिए अपने प्राणों को भी दांव पर न लगा दूँ, तो इससे मेरे हिन्दुत्व का अपमान होगा।'' गांधाजी ने एक अन्य अवसर पर हिन्दू धर्म के प्रति अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कहा ''मेरा हिन्दू धर्म सर्वव्यापी है। यह दूसरे धर्मों के प्रति विरोध का समर्थन नहीं करता। सभी धर्म एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। कोई भी व्यक्ति प्रत्येक धर्म में अच्छे सिद्धान्त खोज सकता है। किसी एक धर्म को दूसरे धर्म से ऊँचा मानना, संतुलित धार्मिक दृष्टिकोण नहीं कहा जा सकता। वास्तव में सभी धर्म, शाश्वत सिद्धांतों की दृष्टि से एक-दूसरे के पूरक हैं। अतः किसी एक धर्म के विशिष्ट लक्षण को दूसरे धर्म का निषेध नहीं माना जा सकता। सही दृष्टिकोण तो यह होगा कि किसी विशिष्ट धर्म के जो विशिष्ट लक्षण शाश्वत सिद्धांतों के अनुकूल हों, उन्हें व्यक्ति को अपने स्वयं के धार्मिक विश्वासों के साथ ही पवित्र मानकर स्वीकार कर लेना चाहिए।''

हिन्दू धर्म को श्रेष्ट धर्म क्यों मानते हैं, इसका कारण स्पष्ट करते हुए गांधीजी ने यंग इण्डिया में लिखा, ''मैं जितने धर्मों को जानता हूँ, उन सब में हिन्दू धर्म सबसे अधिक सहिष्णु है। इसमें कट्टरता का जो अभाव है वह मुझे बहुत पसंद आता है, क्योंकि इससे उसके अनुयायी को आत्माभिव्यक्ति के लिए अधिक से अधिक अवसर मिलता है। हिन्दू धर्म एकांगी धर्म न होने के कारण उसके अनुयायी न सिर्फ अन्य धर्मों का आदर कर सकते हैं, परन्तु दूसरे धर्मों में जो कुछ अच्छाई हो उसकी प्रशंसा भी कर सकते हैं और उसे हजम भी कर सकते हैं। अहिंसा सब धर्मों में समान है परन्तु हिन्दू धर्म में वह सर्वोच्च रूप में प्रकट हुई है और उसका प्रयोग भी हुआ है। मैं जैन धर्म और बौद्ध धर्म को हिन्दू धर्म से अलग नहीं मानता। हिन्दू धर्म न केवल मनुष्य मात्र की बल्कि प्राणी मात्र की एकता में विश्वास रखता है। मेरी राय में गाय की पूजा करके उसने दयाधर्म के विकास में अद्‌भुत सहायता की है। यह प्राणी मात्र की एकता में और इसलिए पवित्रता में विश्वास रखने का व्यवहारिक प्रयोग है। पुनर्जन्म की महान् धारणा इस विश्वास का सीधा परिणाम है। अन्त मैं वर्णाश्रम धर्म का आविष्कार सत्य की निरन्तर शोध का परिणाम है।''

गांधीजी की मान्यतानुसार सर्वोपरि धम्र मानव मात्र की सेवा करना है और वैष्णव के गुणों को धारण करना है।

सन् १६४७ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की एक रैली को सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने जो विचार व्यक्त किए वे उनकी धार्मिक सहिष्णुता के परिचायक हैं। गांधीजी ने कहा, ''अब कि मुझे हिन्दू होने का सचमुच गर्व है मेरा हिन्दू धर्म न तो अनुदार है, न असहिष्णु है और न न्यारा है। जैसा मैं हिन्दू धर्म को जानता हूँ। हिन्दू धर्म बाकी सब धर्मों में जो अच्छाइयाँ हैं उन्हें अपने अन्दर आत्मसात् करता है।

गांधी के अनुसार इतिहास में धर्म का स्तीन

गांधीजी ने इतिहास में धर्म की सृजनात्मक भूमिका को स्वीकार किया है। गांधीजी सत्य और अहिंसा में विश्वास करते थे अतः वे यह मानते थे कि धम्र का अर्थ यह विश्वास हे कि सम्पूर्ण विश्व व्यवसिति रूप में नैतिक नियमों से अनुशासित हो रहा है। इसलिए उन्होंने वॉल्शेविकवाद से सम्बद्ध हिंसा एवं अनीश्वरवादिता का खंडन किया। यद्यपिग ांधीजी अपने को निष्ठावान हिन्दू कहते थे लेकिन वे कट्टरवादी अथवा सम्प्रदायवादी नहीं थे बल्कि पंथों, सम्प्रदायों, संघों, अनुष्ठानों एवं रूढ़ियों की सीमा से परे एक ऐसे महामानव थे जिन्होंने हिन्दू धर्म के नैतिक एवं आध्यात्मिक सार को तो ग्रहण किया ही किन्तु इसके साथ-साथ उन्होंने विश्व के अन्य धर्मों के श्रेष्ठ तत्वों को न केवल ग्रहण किया बल्कि अपने व्यवहारिक जीवन में भी लागू किया। उनकी यह मान्यता थी कि इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म एवं फारसी आदि धर्मों का भी सार वही है जो हिन्दुत्व का है। सत्य की अविराम खोज ही हिन्दू धर्म का सार है। आत्मा के रूप में नैतिक मूल्य ही मनुष्य का धर्म है। अतः नैतिक मूल्यों के नष्ट होते ही धार्मिकता भी स्वतः ही नष्ट हो जाती है। गांधीजी के मतानुसार सभी धर्म समान नैतिक नियमों से बने हैं और मेरा नैतिक धर्म उन नियमों से बना है जो विश्व के समस्त मनुष्यों को एकता के सूत्र में बांधते हैं। इसलिए जब डॉ. राधाकृष्णन ने धर्म के प्रति गांधीजी के दृष्टिकोण को जानने के लिए निम्न प्रश्न पूछे –
१.आपका धर्म क्या है?
२.आप उसके प्रति प्रेरित क्यों हुए?
३.धर्म का सामाजिक जीवन पर क्या प्रभाव है?

तो गांधीजी ने इस प्रश्नों के उत्तर दिये वे धर्म की एवं इतिहास में धर्म के स्थान के बारे में उनकी मनोवृत्ति को स्पष्ट करने वाले हैं –

१.मेरा धर्म हिन्दूत्व है, किन्तु हिन्दुत्व मेरे लिए मानवता का धर्म है। इसकी परिधि में उन समस्त धर्मों अच्छे सिद्धान्त समाविष्ट हैं जिन्हें मैं जानता हूँ।

२.मैं हिन्दूत्व के प्रति सत्य व अहिंसा के सिद्धान्तों के कारण प्रेरित हुआ हूँ जो अपने व्यापकतम अर्थ में प्रेम भावना को ही अभिव्यक्त करते हैं।

३.धर्म का सामाजिक जीवन में व्यापक प्रभाव है और मनुष्य के दैनिक सामाजिक कार्य में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। धर्म से प्रेरित व्यक्ति को दूसरों की सेवा के प्रति समर्पित होना चाहिए। सत्य का साक्षात्कार तब तक सम्भव नहीं हैजब तक कि मनुष्य इन्य प्राणियों से अपना तादात्म्य स्थापित न कर ले। एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति के रूप में मैं सेवा से पलायन नहीं कर सकता। मेरा धर्म मुझे सिखाता है कि सेवा से अधिक प्रसन्नतादायक और कोई नहीं हो सकता। गीता की भावना के अनुसार गांधीजी का विश्वास था कि मनुष्य यदि कर्मयोगी की तरह निष्काम एवं निर्लिप्त जीवन व्यतीत करे तो उसे मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। कर्मयोग से यह अर्थ प्रतिध्वनित होता है कि निःस्वार्थ भाव से अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का पालन करना। यह तभी सम्भव है जब मनुष्य ब्रह्माण्डीय तथा आध्यात्मिक चेतनता से आप्लावित हो। मनुष्य के हृदय के भीतर निरन्तर शुभ एवं अशुभ शक्तियों के बीच चलने वाले द्वन्द्व में सत्य, शुभ एवं पुण्य शक्तियों की विजय ही कर्मयोग है। गांधीजी के मत में राम की रावण पर विजय आध्यात्मिक शक्ति की भौतिक शक्ति पर विजय का प्रतीक है और बुद्ध एवं ईसा का जीवन प्रबल कर्मण्यता एवं गहन प्रेम के समन्वय की भावना से अनुप्राणित था। गांधीजी ने बाइबिल के इस आदेश को हृदयंगम किया कि अपनी आत्मा का विनाश करने की अपेक्षा विश्व का परित्याग का देना अधिक श्रेयस्कर है।

गांधीजी के मत में समाज से धर्म का उन्मूलन करने का प्रयत्न कभी सफल नहीं हो सकता और यदि वह कभी सफल हो सका तो उससे समाज का विनाश हो जाएगा। सत्य, अहिंसा, प्रेम, परोपकार, सहिष्णुता, न्याय एवं भ्रातृत्व भावना आदि धर्म के रूप में विवक` अस्तित्व का आधार हैं और उनका संचालन करते हैं। यह तथ्य कि जगत में इतने सारे मनुष्य अब भी जीवित हैं यह प्रदर्शित करता है कि यह (जगत) शस्त्रबल पर नहीं, सत्य एव्र प्रेम के बल पर आधारित है। अतः इस ब की सफलता का सबसे बड़ा और परम अखण्डनीय साक्ष्य इस तथ्य से प्राप्त होता हे कि जगत युद्धों के बावजूद अब भी विद्यमान है।

गांधीजी के राम

गांधीजी की धार्मिक मान्यताओं के सन्दर्भ में एक बात प्रायः यह उठाई जाती है कि वे साकार ईश्वर में विश्वास करते थे और यह भ्रॉति उनके राम नाम संकीर्तन के कारण हुई है जो प्रार्थना सभाओं में नियमित रूप से गाया जाता था। रामचरितमानस के प्रति उनके प्रेम से भी बहुधा यह भ्रांति हो जाती है कि उनके राम अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र से अिाीन्न थे किन्तु जनमानस में यह भ्रांति गलत है। सवयं गांधीजी ने लिखा हे, ''मेरे राम, हमारी प्रार्थनाओं के राम अयोध्या नरेश दशराि के पुत्र ऐतिहासिक राम नहीं हैं। वे शाश्वत, अजन्मा, अद्वतीय हैं। केवल उन्हीं की मैं पूजा करता हूँ।

रामचरितमानस के प्रति उनके प्रेम के सम्बन्ध में यह संकेतित किया जा सकता हे िकवे रामचरितमानस से इसलिए प्रेम नहीं करते थे कि उसमें एक महान नरेश का जीवन उत्कृष्ट काय के रूप में अंकित किया गया है, बल्कि इसलिए कि वह भक्ति मार्ग की सर्वोत्कृष्ट पुस्तक है। यहाँ यह कहना सामयिक होगा कि यपि सगुणोपासक होने के कारण गोस्वामी तुलसीदास ने साकार राम का चित्र अंकित किया है लेकिन वे प्रसंगानुसार भी अनेकानेक सिलों पर निकराकार, शाश्वत एवं असीम ब्रह्मके लिए 'राम' शब्द का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार गांधीजी के राम भी दशरथ पुत्र राम नहीं हैं बल्कि शाश्वत, अजन्मा ब्रह्म हैं। इसी सन्दर्भ में गांधीजी ने स्पष्ट किया है कि, ''मुझे लगता है कि ईश्वर विशुद्ध रूप से हितकारी है क्योंकि मैं देखपाता हूँ कि असत्य के मध्य सत्य अविचलित है, अंधकार के मध्य प्रकाश अविचलित है। अतः मेरा निष्कर्ष है कि ईश्वर जीवन है, सत्य है, प्रकाश है। वह प्रेम है – परम श्रेयस् है।''

राजनीति का आध्यात्मीकरण

महात्मा गांधी राजनीति में एक पैगम्बर की भाँति आए थे। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किये गये संघर्ष के दौरान कुछ ऐसे कठोर सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिन्हें जीवन के कर्मक्षेत्र में लागू किया जा सकता था। वे संसार को त्यागने वाले संत न होते हुए भी एक ऐसे महामानव थे जिनको जनता संत के समान मानती थी। उन्हें राजनीति में मैकियावली के सिद्धांतों से घृणा थी। गांधीजी के लिए ऐसी राजनीति असह्य थी जो छल-छद्म, कुटिलता एवं निजी स्वार्थों पर आधारित हो बल्कि वे यह चाहते थे कि राजनीति को नैतिकता एवं मानव कल्याण का साधन बनना चाहिए। अतः उन्होंने राजनीति में सत्य, अहिंसा आदि मूल्यों की प्रधानता स्थापित की। उन्होंने सत्याग्रह की एक ऐसी प्रविधि विकसित की जिसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला कर रख दिया। राजनीति के क्षेत्र में गांधीजी के विचारों की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने राजनीति में धर्म का समावेश किया। धर्म से उनका अभिप्राय आज की भाँति सम्प्रदाय या पंथ से नहीं था बल्कि धर्म से उनका अभिप्राय सर्वोच्च नैतिक मूल्यों से था जो मानव कल्याण पर आधारित हैं। यहाँ यह ध्यातव्य है कि गांधीजी ऐसे प्रथम विचारक नहीं थे जिन्होंने राजनीति को आध्यात्मिक मूल्यों से संयुक्त करने का प्रयास किया हो। इससे पूर्व भी गोपाल कृष्ण गोखले ने राजनीति में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के समावेश का प्रयास किया था। गांधीजी ने गोपाल कृष्ण गोखले को इसी कारण अपना 'शिक्षक' एवं 'राजनीतिक गुरु' कहा। सर्वप्रथम गोखले ने ही गांधीजी को यह परामर्श दिया कि भारत और उसकी बहुमुखी समस्याओं को पूर्णरूपेण समझे बिना वे राजनीति में सक्रिय रूप से भाग न लेवें।

गोखले राजनीति को नैतिकता के उच्च आदर्शों से अनुप्राणित करना चाहते थे। उन्होंने धर्म और नैतिकता को राजनीति का आधार माना और यह कहा कि आध्यात्मीकृत राजनीति ही जनसेवा का माध्यम बन सकती है। इसके अभाव में राजनीति सार्वजनिक समस्याओं का निदान नहीं कर सकती। गोखले की ही भाँति गांधीजी ने भी राजनीति में आध्यात्मिकता का सत्व डालकर नैतिक एवं आध्यात्मिक प्रतिमान प्रतिष्ठापित किया। इस सन्दर्भ में जैनेन्द्र का यह कथन उल्लेखनीय है, ''गांधीजी की यर्थाथता राजनीति में नहीं धर्म में देखनी होगी। धर्मप्राण होकर ही राजनीति सत्य है, अन्यथा वह मिथ्या है। राजनीति में गांधीजी समय की भाँति चंचल एवं प्रवाही हैं। उनके रूप बहुत हैं और अपने ही वाक्यों से वे बंधे हुए भी नहीं हैं, परन्तु कहीं अवश्य वे अविचल और ध्रुव हैं। वही उनके व्यक्तित्व के तिलस्म की कुंजी भी हैं गांधीजी ने उपयोगितावादियों के इस तर्क को कभी स्वीकार नहीं किया कि धर्म व्यक्ति का निजी मामला है और इसका उसकी राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए।

गांधीजी ने राजनीति के स्तर को ऊँचा उठाकर उसे मानव मात्र के कल्याण का एक साधन बना दिया। गांधीजी यावज्जीवन इसी प्रयत्न में लगे रहे कि धर्म को राजनीति में प्रविष्ट कराया जाए। गांधीजी के स्वयं के शब्दों ''मेरे लिए मोक्ष का एक मात्र मार्ग यही है कि मैं देश तथा मानव-जाति की सेवा के लिए निरन्तर परिश्रम करूँ। मैं हर जीवित प्राणी के साथ अपना एकात्म्य स्थापित करा चाहता हूँ गीता की भाषा में मैं अपने मित्रों तथा शत्रुओं दोनों के साथ शान्तिपूर्वक रहना चाहता हूँ। अतः मेरे लिए मेरी देशभक्ति, शाश्वत स्वतंत्रता तथा शान्तिलोक की यात्रा की एक मंजिल है। राजनीति में धर्म को समाविष्ट करने का अर्थ है – न्याय तथा सत्य की उत्तरोत्तर की प्रगति करना क्योंकि धार्मिक व्यक्ति किसी भी प्रकार के उत्पीड़न तथा शोषण को सहन नहीं कर सकता।

उन्होंने यह घोषित किया कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानीवय गतिविधियाँ धर्म से अनुप्राणित होनी चाहिए। चाहे वे गतिविधियाँ राजनीतिक हों अथवा सामाजिक व आर्थिक गांधीजी के मत में धर्म का अर्थ संकीर्ण सम्प्रदायवाद नहीं है। यह शाश्वत मानव धर्म, हिन्दुत्व, इस्लाम और इसाइयत से परे जाता है। यह उनका निषेध नहीं करता, उनका विरोध भी नहीं करता। यह तो उन सबके मध्य तादात्म्य स्थापित करता है और मानवीय क्रियाकलाप में नैतिक और मानवतावादी आग्रहों को सर्वोपरि महत्व प्रदान करके इन धर्मों को वास्तविक बनाता है। धर्म के इसी व्यापक पक्ष पर जोर देते हुए गांधीजी ने दावा किया कि राजनीति के प्रति उनके दृष्टिकोण को नैतिकता, आध्यात्मिकता और धर्म से पृथक् नहीं किया जा सकता। उन्होंने यह विश्वास व्यक्त किया कि एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षेत्र में निष्क्रिय नहीं रह सकता क्योंकि ईश्वर के प्रति आस्था उसे जीवन के किसी भी क्षेत्र में विद्यमान बुराई का प्रतिकार करने के लिए अनिवार्य रूप से प्रेरित करेगी। गांधीजी की मान्यता थी ''धर्मविहीन राजनीति से सड़ांध आती है और राजनीति से पृथक् किया हुआ धर्म निरर्थक है। राजनीति का अर्थ है – जनता के कल्याण के लिए सक्रियता। कोई भी व्यक्ति जो ईश्वर की साधना करना चाहता है, इस सत् कार्य के प्रति उदासीन कैसे रह सकता है? मेरे लिए सत्य और ईश्वर एक ही है अतः मेरी यह आकांक्षा रहेगी कि राजनीति के प्रत्येक

क्षेत्र में सत्य के नियम की प्रतिष्ठा हो।'' गांधीजी ने माना कि वही व्यक्ति आध्यात्मिक है जो सम्पूर्ण समाज के वैभव एवं स्वार्थ को त्यागकर सम्पूर्ण समाज की भलाई के लिए कार्य करता है। गांधीजी ने माना कि हम विश्व की नैतिक व्यवस्था में विश्वास रखते हुए सत्य और प्रेम आदि नैतिक नियमों की श्रेष्ठता स्वीकार करें।

धर्म की व्यापकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि जीवन का कोई भी क्षेत्र धर्म से अलग नहीं है और राजनीति भी धर्म से पृथक् नहीं हो सकती। राजनीति को सदैव धर्म की अधीनता में चलना चाहिए। गांधी जी ने यह स्पष्ट किया कि अधिकांश धार्मिक व्यक्ति छद्मवेश में राजनेता हैं, लेकिन वे स्वयं राजनेता का चोला पहनकर भी हृदय से धार्मिक व्यक्ति हैं। वे एक व्यवहारिक धार्मिक आदर्शवादी थे और विश्व में व्याप्त नैतिकता के शासन तथा परम सत्य या ईश्वर पर निर्भरता में विश्वास करते थे। उन्होंने कहा, ''मेरे लिए नैतिकता, चरित्र और धर्म परिवर्तनीय शब्द हैं। धर्म के सन्दर्भ के बिना नैतिक जीवन रेत पर बने मकान की तरह है।'' वर्तमान सभ्यता को परिवर्तित करने की इच्छा ही गांधीजी के राजनीतिक कार्यो और विचारों का सार है। भारतीय परम्परा के अनुसार वे धर्म और राजनीति में कोई विरोध नहीं मानते हैं। उनका यह मत है कि संसार में प्रत्येक जीवन ईश्वरपूरित है। यहाँ ईश्वर का ही शासन है और वही हमारा स्वामी है और इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि प्रत्येक वस्तु को हम उसे सौंप दें और जो कुछ मिले उसे उसका प्रसाद मानकर ग्रहण करें। हम यह मानें कि कोई भी वस्तु मेरी नहीं है और प्रत्येक वस्तु उसकी ही है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गांधीजी के दृष्टिकोण में राजनीति, धर्म और नैतिकता की एक शाखा थी न कि शक्ति और सम्पति प्राप्त करने का एक उपकरण। उग्रनेता बाल गंगाधर तिलक ने एक बार कहा था कि राजनीति साधुओं का खेल नहीं है। इस पर गांधीजी ने तिलक को जवाब दिया कि, ''राजनीति साधुओं का और केवल साधुओं का काम है।'' यहाँ पर साधुओं से गांधीजी का अभिप्राय सज्जन व्यक्तियों से था। रविन्द्र नाथ टैगोर भी गांधीजी के मत से असहमत थे, उन्होंने कहा कि – ''धर्म की इस महान् निधि को इस कमजोर नौका में, जो दल-बन्दी की क्रुद्ध लहरों से टकराती रहती है, मत रखो।'' इन सबके प्रत्युत्तर में गांधीजी ने कहा कि बिना धर्म के राजनीति मुर्दा है, जिसको सिवा जला देने के और कोई उपयोग नहीं हो सकता। डॉ. राधाकृष्णन ने गांधीजी के विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि राजनीतिक क्षेत्र में विश्व को अधिक सफलता मुख्यतः इसलिए प्राप्त नहीं हुई है कि उसने राजनीति को धर्म से पृथक रखा है।

राजनीति में धर्म के प्रवेश से गांधीजी का यह अभिप्राय नहीं था कि राजसत्ता पर धर्माधिकारियों का वर्चस्व रहे अथवा राज्य का एक विशेष धर्म हो और वह उसका प्रचारक बने बल्कि गांधीजी ने जिस आदर्श सामाजिक व्यवस्था का प्रतिमान प्रस्तुत किया है, वह हमारे सामने एक धर्मनिरपेक्ष राज्य का स्वरूप प्रस्तुत करता है।

गांधी जी के अनुसार, ''राज्य में रहने वाले प्रत्येक नागरिक को बिना किसी बाधा के अपना धर्म पालन करने का पूर्ण अधिकार हो- राज्य न तो किसी धर्म का संरक्षरण करे और न किसी धर्म के उचित विकास में बाधक हो। संक्षेप में, राज्य का अपना कोई विशेष धर्म या सम्प्रदाय नहीं होना चाहिए, किन्तु राज्य धर्म-रहित भी न हो। राज्य को नीति-धर्म के शाश्वत और सार्वभौमिक नियमों-सत्य, अहिंसा, प्रेम, सेवा आदि का पूर्ण पालन करना चाहिए। इसी प्रकार राजनीतिज्ञ सब धर्मों के प्रति समान भाव रखें और राजनीति या सार्वजनिक जीवन में नीति धर्म के सार्वभौमिक मूल्यों पर अटल रहें। चूंकि प्रत्येक धर्म के आधारभूत सिद्धांत एक ही प्रकार के हैं, इसलिए राजनीतिज्ञों को कोई कठिनाई न होगी।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी ने राजनीति के आध्यात्मीकरण का मात्र विचार ही नहीं किया बल्कि व्यवहार में उसे कार्यान्वित भी कर दिखाया। एक सन्त राजनीतिज्ञ के रूप में महात्मा गांधी ने सदैव यह चाहा कि राजनीति में विद्रोह, विघटन, अनैतिकता, कुटिलता, छल एवं छद्म जैसी प्रवृत्तियों का उन्मूलन हो तथा उसमें सत्य, अहिंसा, सहयोग, सद्भावना एवं प्रेम जैसे विशुद्ध आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश हो तभी वह सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का एक माध्यम बन सकती है।

संदर्भ–सूची

१.एम. के. गांधी, 'नॉन वॉयलेंस इन पीस एण्ड वार', जिल्द १, पृष्ठ ३८
२.एम.के. गांधी, 'माई रिलीजन',
३.एम.के. गांधी, 'माई रिलीजन', नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, सन् १९५५, पृष्ठ-३
४.एन. के. बोस (स.)ए 'सिलेक्शनस फ्रॉम गांधी', इलाहाबाद सन् १९४८, पृष्ठ २२
५.यंग इण्डिया, १ जून १९२१, १९ मई १९२४, १९ मई १९२७, ९ फरवरी १९३०, २३ अप्रेल १९३१
६.'हिन्द स्वराज्य',
७.मोहनदास करमचन्द गांधी, ऑटोबायोग्राफी, पूर्वोक्त, पृष्ठ ५३०-५६५
८.हिन्द स्वराज्य
९.हरिजन बंधु, १६ फरवरी १९३१, २० अक्टूबर, १९२७ १९ मार्च १९३३, ६ मई १९३३, १४ मई १९३८, १० दिसम्बर १९३८,
१०.हरिजन, २ फरवरी १९३४, १६ फरवरी १९३४, १७ अप्रैल, १९३७, २४ दिसम्बर, १९३८,, १२ जुलाई १९४०,
११.प्यारेलाल, 'महात्मा गांधी : दि लास्ट फेज', भाग-१, पृष्ठ ४३९-४२
१२.पी. मीणा महाजन एवं के.एस. भारती, 'फाउण्डेशन्स ऑफ गांधियन थॉट', देतन्स पब्लिशर्स, नई दिल्ली, सन् १९८७, पृष्ठ-१-२०

१३.प्रार्थना प्रवचन, १६ अक्टूबर, १६४७
१४.रोम्याँ रोलाँ, 'महात्मा गांधी',
१५.शंभूरत्न त्रिपाठी, 'गांधी-धर्म और समाज', पृष्ठ २२
१६.डॉ. बी. एन. पाण्डे, 'गांधी महात्मा : समग्र चिंतन', गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली, सन् १६६४, पृष्ठ १२३
१७.उ.न. ढेबर, 'समाज कल्याण के सूत्रधार', हिन्दुस्तान, २ अक्टूबर, १६६६
१८.वाल्मीकि चौधरी, 'गांधीजी पैगम्बर भी थे और राजनीतिज्ञ भी', हिन्दुस्तान, २ अक्टूबर, १६७१
१६.नवजीवन, ३० जनवरी, १६३१, २१ जुलाई, १६२६
२०.गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'रामचरितमानस' के आरम्भ से उद्धृत
२१.गांधीजी, 'फ्राम यरवदा मंदिर', नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, सन् १६३५, प्रकरण-१०

महेश कुमार रचियता
राजनीतिक विज्ञान डॉ. बी.आर.ए. राज. महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org